लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

कवि - रहीम

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

रहीम

Paper - I

अब्दुल रहीम खानखाना अथवा रहीम अथवा अब्दुर्रहीम खाँ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। अकबर के दरबार में इनका महत्वपूर्ण स्थान था। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। गुजरात के युद्ध में शौर्य प्रदर्शन के कारण अकबर ने इन्हें "खानखाना" की उपाधि दी थी। रहीम अरबी, तुर्की, फारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे। इन्हें ज्योतिष का भी ज्ञान था। रहीम के काव्य में मुख्य रूप से शृंगार, नीति, भक्ति के भाव मिलते हैं।

रहीम का जन्म 17 दिसंबर 1556 को सम्राट अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के यहाँ लाहौर में हुआ था। जन्म से मुसलमान होते हुए भी हिन्दू जीवन के अंतर्मन में बैठकर रहीम ने जो मार्मिक तथ्य अंकित किये, वह उनके विशाल हृदय को दिखाता है। हिन्दू देवी-देवताओं, पर्वों, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का जहाँ भी उनके द्वारा उल्लेख किया गया है, पूरी ईमानदारी के

साथ किया गया है।

प्रमुख रचनाएँ :- रहीम सतसई, नायिका भेद बरवै, मदनाष्टक, रागपंचाध्यायी, नगर शोभा, शृंगार, सोरठा, फुटकर बरवै, फुटकर छंद तथा पद फुटकर कवित्व, सवैये

रहीम कवि गुण के साथ ही युद्धकला में भी प्रवीण थे व कई युद्धों में सेनापति भी रह चुके थे।

रहीम के दोहे में भक्ति - भावना का ही नहीं बल्कि मानव - कल्याण की बातें भी कही गयी है।

"जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।
चंदन बिष व्याप्त नहीं लपटे रहत भुजंग।"

रहीम के काव्य में नीति-न्याय, अध्यात्म, भक्तिपरक दोहों की प्रचुरता है। रहीम का ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं पर अधिकार था। उन्होंने दोहे के अतिरिक्त कवित्त, सोरठा, सवैया, बरवै आदि छन्दों में भी रचनाएं की। उन्होंने अपने काव्य में रामायण, महाभारत पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को लिया है।

रहीम धर्म से मुसलमान व संस्कृति से सभी धर्मों के प्रति आदर रखने वाले थे। वे कृष्ण - भक्त थे। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम, शृंगार का सुंदर समावेश मिलता है।

"एक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै फलै अघाय।"